EDUCATIONAL MANAGEMENT

CHIEF EDITORS

DR. DILIPKUMAR A. ODE

DR. MYTHILI BAI K

ASSOCIATE EDITORS

DR. MADHAVRAO C

MS. R. RAMYA

DR. MINI K ABRAHAM

CO-EDITORS

DR. PRAKASH L. DOMPALE

BHOLANATH SAMANTA

D R K SAIKANTH

Educational Management

Edited by: Dr. Dilipkumar A. Ode, Dr. Mythili Bai K, Dr. Madhavrao C, Ms. R. Ramya, Dr.Mini K Abraham, Dr. Prakash L. Dompale, Bholanath Samanta, D R K Saikanth

■

RED'SHINE PUBLICATION PVT. LTD.

Headquarters (India): 88, Patel Street, Navamuvada,

Lunawada, India-389 230

Contact: +91 76988 26988

Registration no. GJ31D0000034

In Association with,

RED'MAC INTERNATIONAL PRESS & MEDIA. INC

India | Sweden | Canada

■

Text ©*AUTHOR*, 2023

Cover page ©RED'SHINE Studios, Inc, 2023

■

All right reserved. No part of this publication may be reproduced or used in any form or by any means- photographic, electronic or mechanical, including photocopying, recording, taping, or information storage and retrieval systems- without the prior written permission of the author.

■

ISBN: 978-81-19070-57-2

ISBN-10: 81-19070-57-7

DOI: 10.25215/8119070577

DIP: 18.10.8119070577

Price: ₹900

March- 2023 (First Edition)

■

The views expressed by the authors in their articles, reviews etc. in this book are their own. The Editor, Publisher and Owner are not responsible for them. All disputes concerning the publication shall be settled in the court at Lunawada.

■

www.redshine.co.in | info.redmac@gmail.com

Printed in India | Title ID: 9393239398

ISBN: 978-81-19070-57-2

DIP: 18.10.8119070577.005

साहित्यिक चोरी से संबंधित सॉफ्टवेयर : एक मूल्यांकन

संजय शाहजीत
सहायक प्राध्यापक,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान,
मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर छग

❖ सारांश–

उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक शोध को ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है, उच्च शैक्षणिक संस्थानों में अकादमिक योग्यता वृद्धि अनिवार्य हो गया हैं। अपने अकादमिक गतिविधियां एवं प्रोफाइल को ज्यादा सक्षम करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक शोधपत्रों का प्रकाशन करते हैं दूसरे लेखक के वास्तविक विचारों में परिवर्तन करना या अनैतिक तरीके अपनाना बौद्धिक संपदा अधिकार का हनन है। जिससे वे ऐसे कार्यों का प्रयास करते है जो नैतिक रूप से उचित नही हैं। साहित्यिक चोरी के मामलों में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जो हाल के वर्षों में ज्यादातर मामले इस रूप में आते है। शोध एवं साहित्यिक चोरी के लिए आज प्लेगारिज्म डिटेक्टर नाम से बहुत से ऐसे साफ्टवेयर उपलब्ध हैं जो साहित्यिक चोरी को पकड़ते है या प्रतिलिपि की जांच करते है।

कुंजी शब्द *– साहित्यिक चोरी, अकादमिक अनैतिकता, साहित्यिक चोरी सॉफ्टवेयर, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान।*

❖ प्रस्तावना

किसी भी कार्य के प्रति पूरी ईमानदारी से किए मेहनत का प्रतिफल अवश्य ही प्राप्त होता हैं इसमें किसी के तरह की बहस से बचना चाहिए। कहा जाता है कि सत्य को प्रमाण की नहीं कोई आवश्यकता नहीं। साहित्यिक क्षेत्र में व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक सोच एवं प्रकाशन से साहित्य गतिविधि के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि हो रही है, इस वृद्धि के साथ ज्यादा से ज्यादा उपयोक्ता अथवा सूचना चाहने वाले तक पहुंच संभव हो सका है। उच्च शैक्षणिक संस्थानों में अपने अकादमिक उन्नति के लिए योग्यता वृद्धि अनिवार्य हो गया हैं। अपने अकादमिक गतिविधियां एवं

ISBN: 978-81-19070-57-2

प्रोफाइल को मजबूत करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक शोधपत्रों का प्रकाशन कराते हैं। कम समय में या कहे कार्य अनिच्छा से अकादमिक आकांक्षा वृद्धि के लिए ऐसे हथकंड़े अपनाते है जोकि बौद्धिक रूप से स्वीकार्य नहीं हैं। लेखक के वास्तविक विचारों में हेरफेर करना या अनैतिक तरीके अपनाना बौद्धिक संपदा अधिकार का अतिक्रमण है।

❖ परिचय

जैसे कि अभी ज्यादातर उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक शोध को ज्यादा महत्वपूर्ण माना जा रहा है। वास्तव में वास्तिविक स्थिति पर गौर करें तो वैज्ञानिक शोध प्रकाशन को अपने उच्च पद प्रतिष्ठा एवं नौकरी में अवसर की दृष्टिकोण से मापा जा रहा है जिसके फलस्वरूप वर्तमान में ऐसी स्थिति निर्मित हो रही है कि स्वयं मेहनत न कर दूसरे की मेहनत को अपनी कृति या उपलब्धि के रूप में प्रकट करते हैं। ऐसी द्रुतगति में वास्तिविक साहित्यिक लेखक को उसके रचना का किस प्रकार से लाभ बिना अनुमति से लिया जा रहा है या उनका पता नहीं होता कि उनकी वास्तविक कृति का अन्य कोई संबंधित विषय का श्रेय लिया जा रहा है।

हाल के वर्षो में साहित्यिक चोरी या कहें अकादमिक गतिविधियां काफी तेजी से बढ़ी है, इसमें समय सीमा में अपने शोध प्रकाशन को करने की अपेक्षा करना इस ओर साहित्यिक चोरी की ओर प्रवृत्त करने का कारण बनती है। इसमें अकादमिक प्रंकाशन की संख्या जिस प्रकार से बढोतरी हुई है यह एक वजह भी है जिससे ज्यादा से ज्यादा शोध कार्य कर अपने आपको प्रतिष्ठित करना या सेवा प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए किसी अन्य वैज्ञानिक एवं रचनाकार की रचना को अपने नाम से प्रकाशित कराना या उसमें कुछ सूचनाओं को परिवर्तित कर प्रकाशित कराने का प्रयास करना।

साहित्यिक चोरी के मामलों में वैश्विक रूप से बढ़ोतरी हुई है। भारत जैसे विकासशील देश भी इस साहित्यिक एवं अकादमिक कदाचार से जुझ रहा है। 2002 से 2016 के मध्य औसत वृद्धि की जांच के लिए शोध किया गया था जिसमें भारतीय बहु लेखकों की अपेक्षा एकल लेखकों के शोध साहित्यों में ऐसे कदाचार स्पष्ट हुए है।

❖ परिभाषाएं

साहित्यिक चोरी से संबंधित अनेक परिभाषाएं है जिनमें कुछ प्रमुख निम्नानुसार है– विकिपीडिया के अनुसार ''किसी दूसरे के भाषा या विचार, उपाय शैली आदि का अधिकांश नकल करते हुए अपने अपने मौलिक कृति के रूप में प्रकाशित करना साहित्यिक चोरी कहलाती है जब हम किसी दूसरे के द्वारा लिखे हुए साहित्य को बिना उसके संदर्भ दिये अपने नाम से प्रकाशित कर लेते है। इस प्रकार से लिया

ISBN: 978-81-19070-57-2

गया साहित्य अनैतिक बन जाता है और इसे साहित्यिक चोरी कहा जाता है। वर्तमान में साहित्यिक चोरी अकादमिक बेईमानी समझी जाती है। साहित्यिक चोरी कोई अपराध नहीं बल्कि नैतिक आधार पर अमान्य है।'' 5

मेरियम वेबस्टर ऑनलाइन डिक्शनरी के अनुसार ''साहित्यिक चोरी'' का अर्थ है–

1. चोरी कराना या दूसरे के विचार या शब्द को स्वयं के रूप में प्रस्तुत करना,
2. दूसरे के काम को बिना श्रेय दिये उपयोग करना,
3. साहित्यिक चोरी करना,
4. मौलिक स्त्रोत से एक विचार या उत्पाद को नए और मूल रूप में प्रस्तुत करना।''6

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुसार ''साहित्यिक चोरी से अभिप्राय किसी अन्य के द्वारा किए गये कार्य या विचार को निजी प्रयोग में लेना तथा अपने नाम से दूसरे को देना।''7

कोलिन शब्दकोश के अनुसार ''साहित्यिक चोरी किसी और के विचार या कार्य का उपयोग करने या उसकी नकल करने और दिखावा करने की प्रथा है कि आपने इसके बारे में सोचा या इसे बनाया है।''8

केन्ट विश्वविद्यालय के अनुसार ''एक निर्देशात्मक तरीके से साहित्यिक चोरी तक होती है जब एक लेखक जानबूझकर किसी और की भाषा, विचारों, या अन्य मूल (जिसमें सामान्य ज्ञान नहीं) सामाग्री का उपयोग इसके स्त्रोत को स्वीकार किए बिना करता है।''9

डिक्शनरी.कॉम के अनुसार ''साहित्यिक चोरी तब होती है जब एक लेखक दूसरे लेखक की भाषा या विचारों की नकल करता है और फिर काम को अपना कहता है। कॉपीराइट कानून लेखकों के शब्दों को उनकी कानूनी संपत्ति के रूप में संरक्षित करते है। साहित्यिक चोरी के आरोप से बचने के लिए लेखक उन लोगों को श्रेय देने का ध्यान रखते हैं जिनसे वे श्रेय लेते हैं और उदघृत करते हैं।''10

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट होता है कि दूसरे के भाषा–विचार, लेखन की शैली के आधार पर मौलिक कृति से बहुत अधिक साम्यता या जानबुझकर सामाग्री का उपयोग करना साथ ही वास्तविक लेखक को उसकी कृति का श्रेय दिये बिना अपने नाम से प्रकाशन कराना साहित्यिक चोरी की श्रेणी में आता है।

❖ साहित्यिक समीक्षा

कारमेक, ग्राउटिन एवं नोवाक, मटिजा, 2015 ''छात्र प्रोग्रामिंग असाइनमेंट में स्त्रोत कोड साहित्यिक चोरी का पता लगाने के लिए प्रक्रिया मॉडल में सुधार'' इस पत्र में साहित्यिक चोरी का प्रता लगाने वाले इंजन को विस्तृत किया गया है जो तुलनात्मक रूप से समानता दिखने वाले दस्तावेजों को जांचता है या जिनमें ऐसी

ISBN: 978-81-19070-57-2

संभावना होती है। इसमें ऐसे स्त्रोत कोड़ फाइलों में साहित्यिक चोरी का पता लगाने के लिए किया गया जो पाठ्य फाइलों की जांच करता है। प्रस्तुत शोध में 2011–12 से 2013–14 के तीन पाठ्यक्रमों के 20 असाइनमेंट पर यह प्रक्रिया मॉडल जावा एप्लीकेशन पर आधारित था। प्रक्रिया मॉडल के 12 चरण होते है जिसके माध्यम से स्त्रोत कोड का उपयोग किये बिना उपयोग किया जा सकता है। विकसित सॉफ्टवेयर से दो शैक्षणिक सत्र के तीन असाइमेंट का परीक्षण किया गया। प्रस्तावित प्रक्रिया मॉडल साहित्यिक चोरी के लिए परिणात्मक रहा। 12

सिंह,बीपी, 2019, ''डिजिटल युग में साहित्यिक चोरी को रोकना–भारतीय विश्वविद्यालय के संदर्भ में'' यह पत्र डिजिटल युग में साहित्यिक चोरी के संबंध में विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत करता है साहित्यिक चोरी रोकने के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों में युजीसी एमएचआरडी, और इन्फलीब्नेट है। केंद्र सरकार ने 2014 परियोजना के तहत विश्वविद्यालयों को शोध गंगाा के लिए आइथेंटिकेट और टर्निटिन प्रदान किया था। साहित्यिक चोरी में इंटरनेट एक अहम भूमिका में है ज्यादातर नकल या प्रतिलिपिकरण जैसे कार्य विभिन्न वेबसाइटों से होते है। 13

अहमद, राणाखुदैर अब्बास, 2015 ''विभिन्न साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले उपकरणों का अवलोकन'' इस शोध पत्र में 21 प्रमुख साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले उपकरणों का विवरण प्रस्तुत करता है जिसके माध्यम से चोरी का पता लगता है। इस पत्र में मानव आंख को साहित्यिक चोरी पकड़ने वाले प्रमुख उपकरण बताया है। इनके अनुसार विभिन्न संस्थानों में अभी टर्निटिन का उपयोग हो रहा है। 14

एम, बहोडरी और अन्य 2012, ''साहित्यिक चोरीः अवधारणा, कारक और समाधान'' इस पत्र में साहित्यिक चोरी के विकसित होती अवस्था पर वैज्ञानिक समूदाय द्वारा चिंता व्यक्त किया गया है कि ज्ञान उत्पादन और अनैतिक स्थिति उनके अनुकूल नहीं है। यह स्थिति व्यापक तौर पर हो चुकी। छात्रों एवं शिक्षकों को इस संबंध में प्रशिक्षित कर साहित्यि चोरी को रोका जा सकता है। साहित्यिक चोरी से बचने के लिए बेहतरण रणनीति के बारे में बताया गया है जो एक प्रभावी साधन है। 15

❖ साहित्यिक चोरी का पता लगाना–

किसी भी प्रकार के प्रकाशन के दोहराव का पता लगाना काफी चुनौतीपूर्ण है क्योंकि साहित्यिक चोरी करने वाला किसी भी माध्यम से प्रतिलिपि या चोरी कर सकता है, जैसे प्राथमिक स्त्रोत संबंधित सामाग्री। अतः ऐसे मामालों से निपटने के लिए विभिन्न तरीकों को अपनाया जाता हैं। शोध एवं साहित्यिक चोरी के लिए आज प्लेगारिज्म डिटेक्टर नाम से बहुत से ऐसे साफ्टवेयर उपलब्ध हैं जो चोरी को पकड़ते या प्रतिलिपि की जांच करते है।

ISBN: 978-81-19070-57-2

अक्षर आधारित चोरी अधिकांश साहित्यिक चोरियां इसी पर आधारित है जिसमें शब्द, वाक्य–विन्यास आदि, इसके अतिरिक्ति भाषागत, लिखने के तरीके, वाक्य सांरचना आधारित, व्याकरण विधि से संबंधित आदि।

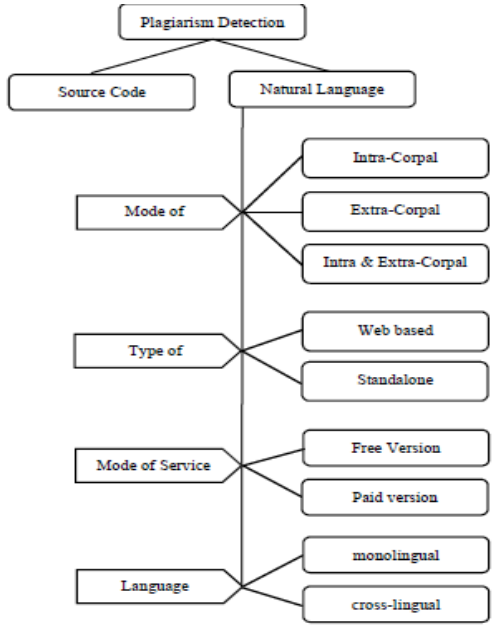

साहित्यिक चोरी पकड़ने वाले उपकरणों की श्रेणियां

स्त्रोत –साहित्यिक चोरी पकड़ने वाले उपकरण और तकनीक: एक व्यापक अध्ययन, जेफ्रीया और अन्य *Journal of Science-FAS-SEUSL (2021) 02(02) 47-64, ISSN: 2738-2184*

❖ साहित्यिक चोरी एक समस्या–

किसी के वास्तविक शब्द एवं विचारों को अपने नाम से या स्वयं के कार्य के रूप में दिखाना अकादमिक रूप से अनैतिक है जो हाल के वर्षों में ज्यादातर मामले इस रूप में आती है। इस प्रकार के विभिन्न प्रकरणों में सिद्ध हो चुका है और ऐसे प्रकरण देखने को मिलते है कि किसी और के शोध कृति में परिवर्तन कर उसे अपने वास्तविक श्रम रूप में प्रस्तुत करते है। जिस प्रकार से सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रादुर्भाव बढ़ा है वेसे ही चोरी एवं परिवर्तन संबंधित मामलों में भी काफी वृद्धि हुई है और साहित्यिक अनैतिकता में वृद्धि के कारक रूप है। अकादमिक संस्थाओं द्वारा नियम के प्रति कठोर न होना भी उनके लिए लाभप्रद है जिससे ऐसे कृत्य को प्रभावित नहीं करते हैं। इस समस्या के लिए उच्च स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं और ऐसे प्रावधान भी हो रहे की साहित्यिक चोरी करने वालों को दंड़ित किया जा सके।

ISBN: 978-81-19070-57-2

उपयोगी सॉफ्टवेयर	साहित्यिक चोरी/विरोधी कार्य प्रणाली
उरकूंड	उरकूंड साहित्यिक चोरी रोधी प्रमुख साफ्टवेयर है जो मुलतः स्वीडिश कंपनी स्वामित्व प्रियो इन्फोसेंटर की है यह पूरी तरह से स्वचालित साफ्टवेयर है जिसका उपयोग विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में उपयोग किया जा रहा हैं। इसमें इंटरनेट, सामयिक प्रकाशन और पुस्तकें आधारित एवं पहले से जमा की जा चुकी सत्रीयकार्य की जांच करता है।
टर्निटिन	टर्निटिन साफ्टवेयर एक वेब आधारित साफ्टवेयर अमेरिकन कंपनी है जोकि दूरस्था माध्यम से प्रकिया पूरी करने की अनुमति प्रदान करता है। त्रुटिपूर्ण एवं संदिग्ध दस्तावेजों को डेटाबेस में प्रविष्टि कर प्रकिया पूरी की जाती है।
आइथेंन्टीकेट	आइथेंन्टीकेट यह साहित्यिक चोरी की संभावना की जांच करता है यह प्रमुख प्रकाशन के विरूद्ध समानताओं की परखता है यह शोधकताओं एवं व्यवसायिक लेखकों के लिए अच्छा साफ्टवेयर है। मूलरूप से यह सॉफ्टवेयर व्यक्तिगत न होकर व्यवसायिक प्रकाशन के लिए सहायक है।
प्लेजस्कैन	प्लेजस्कैन यह साफ्टवेयर आइथेंटिकेशन का ही उत्पाद है जो शोधकताओं को समानता खोजने में सहायक है यह चोरी की रिपोर्ट आकर्षक तरीके से पेश करता है। चोरी के मामलों को पता लगाने के लिए अच्छा है जो लाखों दस्तावेजों से समानता की जांच करता है एवं शब्दों में परिवर्तन संबंधि सुझाव देता है।
शोध शुद्धि	1 सितम्बर 2019 से भारत सरकार के एक कार्यक्रम के तहत इसे चालू किया गया था जोकि भारतीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में साहित्यिक चोरी का पता लगाने के लिए पहुंच प्रदान करता है। पहले से शैक्षणिक संस्थानों द्वारा उरकूंड सॉफ्टवेयर के नाम से यह प्रचलित था। इसे संस्थानिक एवं राज्यकीय संस्थान की दो श्रेणियों में रखा गया है।
क्वीलबोट	क्वीलबोट एक वेब आधारित साफ्टवेयर है, व्यवसायी, छात्र एवं शोधकर्ताओं के बीच काफी लोकप्रिय है। यह पैराग्राफ की संरचना को परिवर्तित कर शब्दों को पर्यायवाची शब्दों से तैयार करता है और साहित्यिक चोरी से मुक्त करता है।
प्लेजवेयर	प्लेजवेयर एक खोज इंजन है जो पाठ्य आधारित साहित्यिक चोरी का पता लगाने के लिए ऑनलाइन सेवा प्रदान करता है। जो सक्षमता से खोजे गये निर्दिष्ट विषय के बारे में विश्लेषण प्रदान करता है।

प्लेजिअरिज्म फाइंडर	प्लेजिअरिज्म फाइंडर यह ऑपरेटिंग सिस्टम आधारित साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले एप्लीकेशन है और पीडीएफ, एचटीएमएल, डॉक, टीएक्सटी और आरटीएफ फाइलों को पढ़ने में सक्षम है। फाइलों का सत्यापन और एचटीएमएल फाइलों की रिपोर्ट पेश करता है।
ऑक्सीजन डॉट आईडी	ऑक्सीजन डॉट आईडी यह बिना लागत के एक वेब आधारित शोध प्रबंध साहित्यिक चोरी की जांच करता है।
प्लेजिअरिज्म चेक एक्स	यह वेब आधारित साहित्यिक चोरी की जांच उपलब्ध कराता है जिसमें शोधपत्र, लेख, सत्रीय कार्य की जांच करता है। उच्च गति से साहित्यिक समानता का परिणाम प्रस्तुतक करता है।

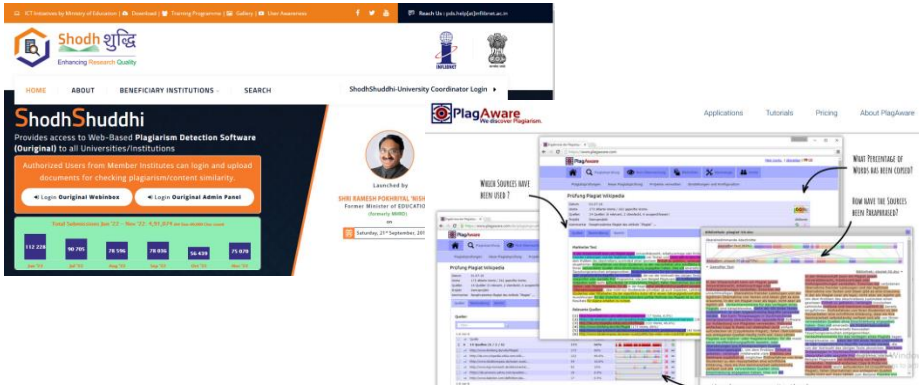

Source:https://pds.inflibnet.ac.in/,https://www.plagaware.com/service/dataprotection, https://plagiarismcheckerx.com/

❖ निष्कर्ष एव सुझाव :–

किसी लेखक के परिश्रम को उसका श्रेय न देकर अपने नाम से श्रेय करना अनैतिक कार्य है, शोध लेखन, शोधप्रबंध परियोजना में बिना उद्धरण दिये लाभ लेना उचित नहीं है, इस प्रकार के कृत्य की जांच के लिए आज विभिन्न सॉफ्टवेयर मौजूद है जो विभिन्न प्रकार से समानता की जांच करते है। ज्यादातर शोध छात्रों में कार्य के अधिकता, अरूचिपूर्ण कार्य एवं व्यवसायिक लाभ के लिए इस प्रकार के तरीके अपनाये जाते है। ऑनलाइन स्त्रोतों में अनगिनत ज्ञान का खजाना उपलब्ध है जिसमें से कुछ संदर्भ लिया जाता है तो उस ऑनलाइन सामागी का उल्लेख स्पष्ट रूप से होना चाहिए।

ISBN: 978-81-19070-57-2

किसी प्रकार की प्रतिलिपि समानता की गतिविधि को छोड़ देना चाहिए आज विश्वभर में अनेकों साहित्यिक चोरी की जानकारी उपलब्ध कराने वाले साफ्टवेयर उपलब्ध है समानता एवं ऑनलाइन माध्य से ली गयी सामग्री की तुरंत रिपोर्ट प्रस्तुत करता है या कुछ अंश में समानता होने पर रेखांकित करता है। अतः इस प्रकार के कृत्य में लेखक या वास्तविक श्रेय धारक को उसका उद्धरण देना उचित कदाचार की श्रेणी में आता है। ज्यादातर शैक्षणिक संस्थानों में अनैतिक कदाचार के लिए नियम लागू किये गये है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी इसके के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में अकादमिक सत्यनिष्ठा एवं साहित्यिक चोरी की रोकथाम को प्रोत्साहन विनियम 2018 लागू किया है जिसके तहत अकादमिक सत्यनिष्ठता एवं मौलिकता के लिए संबंधित प्रक्रिया का पालन किया जाएगा।

❖ संदर्भ–

1. Garg, Urvashi and Goyal, Vishal (2016) Maulik: a Plagiarism detection tool for hindi documents, Indian Journal of Science and Technology, Vol 9(12), DOI: 10.17485/ijst/2016/v9i12/86631, March 2016, ISSN (Print) : 0974-6846, ISSN (Online) : 0974-5645 p1-11.
2. Ahmed, Ranakhudair, International Journal of Futuristic Trends in Engineering and Technology ISSN: 2348-5264 (Print), ISSN: 2348-4071 (Online) Vol. 2 (10), 2015 http://people.ucalgary.ca/~nurelweb/academic/plag.html
3. Tripathi, Richa and Kumar, S, Plagiarism: A Plague,7 th International CALIBER-2009,p514-519, Pondicherry University, Puducherry, February 25-27, 2009 © INFLIBNET Centre, Ahmedabad.
4. Ahmed, RanaKhudhair Abbas,Overview of Different Plagiarism Detection ToolsInternational, Journal of Futuristic Trends in Engineering and Technology ISSN: 2348-5264 (Print), ISSN: 2348-4071 (Online) Vol. 2 (10), 2015, p1-3.
5. Ahmed, RanaKhudhair Abbas,Overview of Different Plagiarism Detection ToolsInternational, Journal of Futuristic Trends in Engineering and Technology ISSN: 2348-5264 (Print), ISSN: 2348-4071 (Online) Vol. 2 (10), 2015, p1-3.
6. Process Model Improvement for Source Code Plagiarism Detection in Student Programming Assignments KERMEK,Dragutin and NOVAK Matija Informatics in Education, 2016, Vol. 15, No. 1, 103–126 © 2016 Vilnius University DOI: 10.15388/infedu.2016.06

7. Singh, B.P. (2016). Preventing the plagiarism in digital age with special reference to Indian Universities. International Journal of Information Dissemination and Technology, 6(4), 281-287.
8. Jiffriya, MAC and others, Plagiarism detection tools and techniques: A comprehensive survey Journal of Science-FAS-SEUSL (2021) 02(02) 47-64, ISSN:2738-2184
9. M, Bahadori, Plagiarism: Concepts, Factors and Solutions, Iranian Journal of Military Medicine Vol. 14, No. 3, Autumn 2012; 168-177
10. https://www.shodhadarsh.page/2020/03/shodh-kaaryon-mein-saahityik-c-LA-C9o.html
11. https://www.semanticscholar.org/paper/Avoiding-plagiarism%2C-self-plagiarism%2C-and-other-A-Roig/a018c5a4737808d095d1a8cc856aa41899cfc3f5
12. https://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_665.html
13. https://www.ugc.ac.in/pdfnews/6100340_Concept-Note-Blended-Mode-of-Teaching-and-Learning.pdf
14. https://www.colorado.edu/atlas/sites/default/files/attached-files/the_impact_of_online_teaching_on_higher_education_faculty.pdf
15. https://ceur-ws.org/Vol-706/poster22.pdf